श्रद्धांजलि गीत

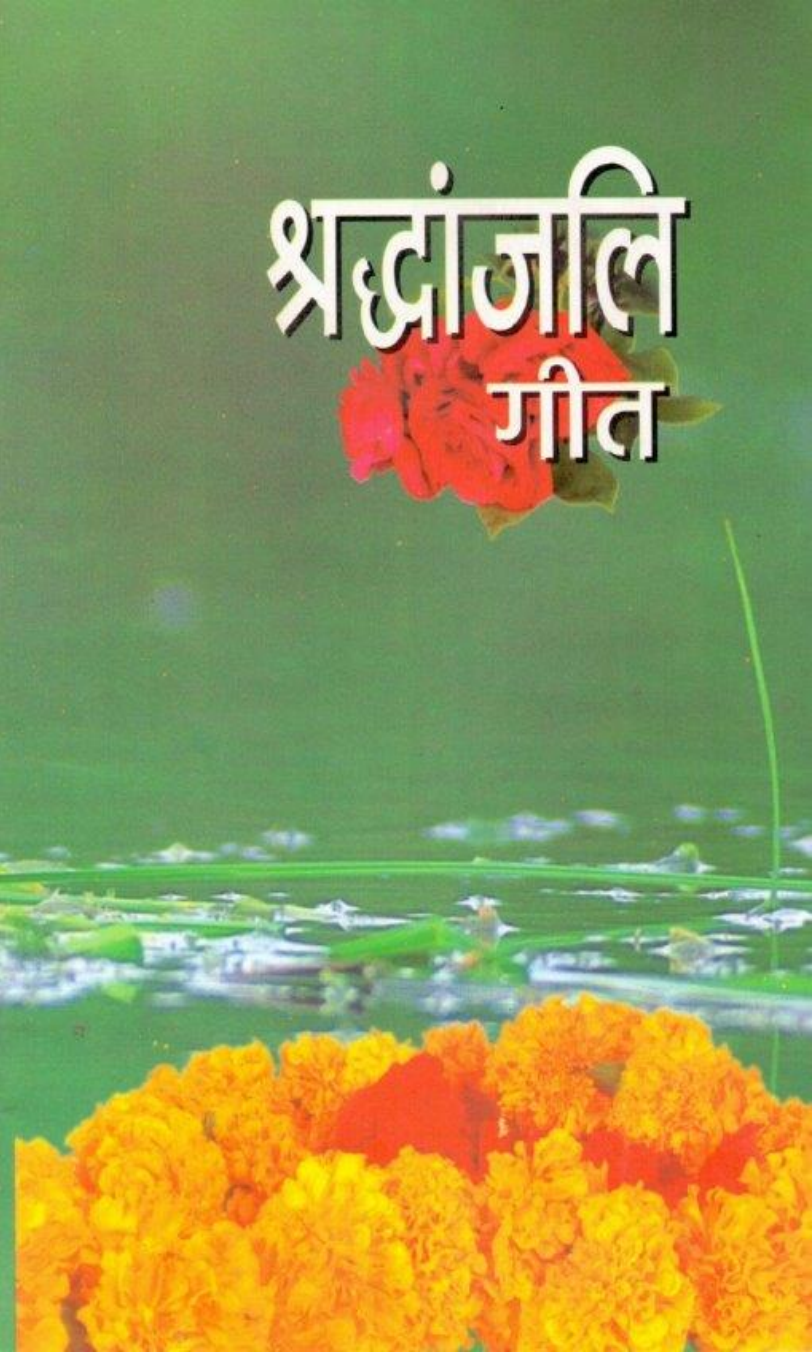

आश्वासन

तुम न घबराओ न आँसू ही बहाओ अब,
और कोई हो न हो पर मैं तुम्हारा हूँ।
मैं खुशी के गीत गा-गा कर सुनाऊँगा,
तुम न घबराओ.....॥

मानता हूँ ठोकरें तुमने सदा खाईं,
जिन्दगी के दाँव में हारें सदा पाईं।
बिजलियाँ दुःख की निराशा की सदा टूटीं,
मन गगन पर वेदना की बदलियाँ छाईं।
पोंछ दूँगा मैं तुम्हारे अश्रु गीतों से,
तुम सरीखे बे-सहारों का सहारा हूँ।
मैं तुम्हारे घाव धो मरहम लगाऊँगा,
मैं विजय के गीत गा-गा कर सुनाऊँगा।
तुम न घबराओ.....॥

खा गई इन्सानियत को भूख यह भूखी,
स्नेह ममता को गई पी प्यास यह सूखी।
जानवर भी पेट का साधन जुटाते हैं,
जिन्दगी का हक नहीं हैं रोटियाँ रूखी।
और कुछ माँगो हँसी माँगो खुशी माँगो,
खो गये हो दे रहा तुमको इशारा हूँ।
आज जीने की कला तुमको सिखाऊँगा,
जिन्दगी के गीत गा-गा कर सुनाऊँगा।
तुम न घबराओ .....॥

—परम पूज्य गुरुदेव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नई शक्ति दूँगा

नये देश को मैं नई भक्ति दूँगा,
कि युग को नई एक अभिव्यक्ति दूँगा।

जगा देश सारा मिटी कालिमा है,
गगन में छिटकने लगी लालिमा है।
निशानाथ सोये जगा अंशुमाली,
पथिक ने नये लक्ष्य की राह पाली।
प्रगति पंथ पर वेग से बढ़ चले जो,
करोड़ों पगों को नई शक्ति दूँगा॥

न होगा कभी दृष्टि से लक्ष्य ओझल,
मनोबल हमारा बनेगा सुसंबल।
अथक शक्ति ले पग हुए आज गतिमय,
झुकेगा किसी दिन जमीं पर हिमालय।
धरा पर नया स्वर्ग बसकर रहेगा,
मनुज को विवशताओं से मुक्ति दूँगा।

मनुजता न रुकती कभी आँधियों से,
मनुजता सहमती न बरबादियों से।
मनुजता ने चाहा वही करके छोड़ा,
दनुजता से डरकर कभी मुँह न मोड़ा।
शपथ ले उठी है जवानी हमारी,
नये देश को त्याग अनुरक्ति दूँगा॥

अभी कल्पना हो सकी है न पूरी,
अभी साधना रह गयी है अधूरी।
अभी तो प्रगति का खुला द्वार केवल,
अभी लक्ष्य में शेष है और दूरी।
बिना लक्ष्य की प्राप्ति के जो न लौटे,
मैं ऐसी प्रखर शक्ति के व्यक्ति दूँगा॥

—परम पूज्य गुरुदेव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञान स्वरूप गुरुदेव

हरने को अज्ञान तिमिर प्रभु! तुम धरती पर आये।
ज्ञान किया साकार जगत में, वेदमूर्ति कहलाए॥

बुद्धिवाद की बढ़ी यहाँ पर ऐसी भीषण आँधी।
'सा विद्या या विमुक्तये' सबने बात भुला दी॥
शिक्षा केवल उदरपूर्ति का साधन यहाँ रही थी।
है सम्भव उत्थान ज्ञान से तुमने बात कही थी॥
भटक रहा था मानव जो अँधियारे गलियारों में।
ज्योतिपुंज! तुम उसे ज्ञान दे, सत्पथ पर ले आए॥

गुरुवर! तुमने जन-जीवन के साथ ज्ञान को जोड़ा।
श्रेष्ठ ज्ञान देकर जन रुचि को, उसी दिशा में मोड़ा॥
जीवन की हर कठिनाई का समाधान है इसमें ।
तन-मन अन्तस् के सब रोगों का निदान है इसमें॥
तुमने किये प्रयोग अनोखे अपने ही जीवन पर।
तभी ज्ञान का सिद्ध रसायन, जन-जन को दे पाए॥

गायत्री को ज्ञानरूप में तुमने वरण किया है।
कोटि-कोटि मानव ने इस पथ पर अनुसरण किया है॥
जन-जन को अपने अनुभव की गाथा यहाँ सुनाई।
रचकर 'ज्योति अखण्ड' ज्ञान की गंगा यहाँ बहाई॥
प्रतिभाओं का परिष्कार यूँ तुमने किया यहाँ पर।
अनगिन निष्प्राणों में तुमने नूतन प्राण जगाए॥

ज्ञान ज्योति लेकर गुरुवर की द्वार-द्वार जाएँगे।
उनके चिन्तन की सुगन्ध हम घर-घर फैलाएँगे॥
इसके लिए समय, श्रम-साधन नियमित दिया करेंगे।
यूँ सूरज का काम रश्मियाँ बनकर किया करेंगे॥
जग की तपन मिटाने को हम वे जल कण बरसायें।
ज्ञान सिंधु ने तप-तपकर हैं जो हम तक पहुँचाये॥

—शचीन्द्र भटनागर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरु सत्ता को प्रणाम

नवयुग की गीता के गायक ! शत शत तुम्हें प्रणाम है।
आत्म चेतना के उन्नायक! शत शत तुम्हें प्रणाम है॥

देव भूमि में देव संस्कृति को हम अपनाना भूले।
थे दैवी अनुदान असीमित, किन्तु उन्हें पाना भूले॥

जगन्नियन्ता का स्वर अपने अहंकार में भूले हम।
ईश्वर ने जो दिया उसी का ढेर लगाकर फूले हम॥

तुमने सिद्ध किया गुरुता को, हमें जगाया तन्द्रा से।
स्रष्टा के स्वर के परिचायक! शत-शत तुम्हें प्रणाम है॥

दृश्य रूप में ईश चेतना गुरु बनकर जो आती है।
गायत्री में सद्विचार-सद्भाव वही कहलाती है॥

यज्ञ रूप हो तुमने प्रभु! सत्कर्म सभी को सिखलाया।
कर्मयोग का मुक्ति मार्ग जन-जन को तुमने दिखलाया॥

तुम थे काया नहीं चेतना रूप रहे परमेश्वर के।
कर्मों के तुम ही फलदायक, शत-शत तुम्हें प्रणाम है॥

जितने साधन बढ़े स्वार्थ उतना ज्यादा हमको दीखा।
शक्ति साधनों का हमने कुछ सद्उपयोग नहीं सीखा॥

करुणा संवेदना भुला दी, वर्ग भेद उपजाया था।
तभी स्नेह समता सुबुद्धि तुमने सद्भाव जगाया था॥

गायत्री को किया मुक्त माँ सुलभ हुई संतानों को।
जन-जन के प्रेरक जननायक! शत-शत तुम्हें प्रणाम हैं॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कण-कण में गुरुरूप तुम्हारी ही चेतना समायी है।
रोम-रोम में देव ! तुम्हारी सत्प्रेरणा समायी है॥

हम हैं शिष्य तुम्हारे कभी न जनहित से मुह मोंड़ेगे।
अखिल विश्व का कोना-कोना गुरुसत्ता से जोड़ेंगे॥

तुम ही तो उज्वल भविष्य के सफल सूत्र संचालक हो।
हे नवयुग के विश्व विधायक! शत-शत तुम्हें प्रणाम है।

—शचीन्द्र भटनागर

मेरे दीपक जलते रहना

जब तक करुणा पिघल न जाये,
चाव दरश के पलते रहना।
जब तक मिले न प्रभु का मन्दिर,
दीपक तब तक जलते रहना॥

निकल पड़े तो मंजिल पाना-मानवत्व का स्वाभिमान है,
मन चाहा पा लेने में ही-इस जीवन की रही शान है।
जब तक मिले न लक्ष्य अनश्वर -राही पथ पर बढ़ते रहना॥

उस गागर की उमर बड़ी है-पनघट पर निशान जो छोड़े,
जल धारा भी वही श्रेष्ठ है-जो धरती अम्बर को जोड़े।
जब तक बुझे न प्यास सिन्धु की-हिमगिरि तुम नित गलते रहना॥

नहीं अंधेरा नियति हमारी -हम चिर ज्योति पुंज के सुत हैं,
हमको सतत् प्रकाश चाहिए-मूल्य चुकाने हित प्रस्तुत हैं॥
जब तक मिले न तेज सूर्य का-मेरे प्राण मचलते रहना॥

—माया वर्मा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सच्ची श्रद्धाञ्जलि

देव पुरुष आया तब हमने हँसकर की अगुवाई।
कार्य पूर्ण कर कह सकते हैं हमने प्रीति निभाई॥

पुष्पाञ्जलि सच्ची हम सब की तभी कही जायेगी।
सेवा की खुशबू जब सबके कर्मों से आएगी॥
लोग कहें जन जागृति की यह महक कहाँ से आयीं?

ऐसे ही जो अर्घ्य चढ़े वह जल हो ममता वाला।
हर प्यासे के मुख तक पहुँचे, प्रेमामृत का प्याला॥
जब-जब प्रेम बढ़ा धरती पर, घृणा सिमटती पायी।

आज समय वह जब धरती से दुश्चिंतन मिटना है॥
और सतोगुण से यह सारा भूमण्डल पटना है।
युग परिवर्तन हेतु तभी तो ज्योति अखण्ड जलाई॥

हम सब उनके शिष्य, उन्हीं की दृष्टि श्रेष्ठ हम पायें।
उनकी युग निर्माण योजना वसुधा पर फैलायें॥
जग मानेगा हमने सच्ची श्रद्धाञ्जलि चढ़ायी।

—माया वर्मा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सविता वन्दना

विश्व की सत्प्रेरणा के स्त्रोत सविता को नमन।
जीव की हर चेतना के स्रोत सविता को नमन।।

तुम नियन्ता की सृजन की शक्ति के आधार हो।
ज्योति के हे पुञ्ज! प्रभु के रूप तुम साकार हो॥
ईश की अवधारणा के स्रोत सविता को नमन।
विश्व.....

मिल सके तुमसे हमें ओजस् प्रखर तेजस् प्रभो।
और वर्चस्वी बने प्रत्येक का अन्तस् प्रभो॥
दिव्यता की साधना के स्त्रोत सविता को नमन।
विश्व..... ॥

देह-मन अन्तःकरण को प्राणमय करदो प्रभो।
विश्व के सन्ताप से सबको अभय करदो प्रभो।।
मानवी सद्भावना के स्त्रोत सविता को नमन।
विश्व..... ॥

प्राण ऊर्जा से हमारी हर क्रिया भरपूर हो।
ज्ञान के भण्डार! हर जड़ता मनुज की दूर हो।।
बुद्धि के संवेदना के स्त्रोत सविता को नमन।
विश्व..... ॥

लोक मंगल को मिली हर ऋद्धि एवं सिद्धि हो।
दूर हों दुष्प्रवृत्तियाँ, सद्वृत्तियों में वृद्धि हो॥
लोकहित की कामना के स्त्रोत सविता को नमन।
विश्व..... ।।

कल्मषों की कालिमा हरलो मिटे दुःख शोक सब।
व्यक्ति के अन्तःकरण तक तुम भरो आलोक अब॥
सतयुगी प्रस्तावना के स्त्रोत सविता को नमन।
विश्व..... ॥

—शचीन्द्र भटनागर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गरिमा मय गुरुद्वारा

कैसे बिसरायें उन गुरु को

हमको मुक्त कराने जिसने तोड़ी, भीषण तम की कारा।
भूल भटके इस जीवन को, जिनने दिया अपार सहारा।
कैसे बिसरायें उन गुरु को

जकड़े थे बंधन माया के, पकड़े थे पिंजड़े काया के।
दिशा हीन हो निरालम्ब हो, भटक रहे थे ज्यों बंजारा॥
कैसे बिसरायें उन गुरु को

तम की लहरें थी तूफानी, तब भी करते थे नादानी।
तब प्रकाश बन हाथ बढ़ाया, चीरी गहरे तम की धारा॥
कैसे बिसरायें उन गुरु को

खींचा हमको मझधारों से, बांध लिया स्नेहिल तारों से।
डूब रहे को तिनके का क्या, नैया का मिल गया सहारा॥
कैसे बिसरायें उन गुरु को

दिव्य पिता का प्यार मिला फिर, माँ का मधुर दुलार मिला फिर।
थे अनाथ पहले लेकिन अब, वसुधा है परिवार हमारा।
कैसे बिसरायें उन गुरु को

महाप्राण की सुन गुरुवाणी, प्राणों को मिल गई जवानी।
गुरु के गीत गुनगुनाता अब, क्षण-क्षण सांसों का इक तारा॥
कैसे बिसरायें उन गुरु को

—मंगल विजय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरुवर के अनुदान

गुरु अपना तप देकर करते आये शिष्यों का निर्माण।
वही शक्ति पाकर शिष्यों ने किये जगत में कार्य महान॥

यम ने नचिकेता को आत्मा,की महानता बतलाई।
अनुशासित शिष्यत्व निभाया, तभी तत्व की निधि पायी॥
है दुर्लभ अन्यत्र जगत, ऐसा आत्मा का विज्ञान॥

गढ़ा राम को गुरु वशिष्ठ ने, हुआ असुर रावण का नाश।
सांदीपनि का तेज कृष्ण ने, गीता का कर दिया प्रकाश॥
बदले काल इन्होंने पाकर, अपने सद्गुरु से अनुदान॥

थे चाणक्य बुद्धि के स्वामी, उन्हें चाहिए थे दो हाथ।
चन्द्रगुप्त में क्षमता पायी, लिया देशहित उसका साथ॥
राजनीति का क्षेत्र जगाया, किया राष्ट्र भर का उत्थान॥

एक बार फिर घिरा घनों से, प्यारे भारत का आकाश।
प्राणनाथ ने छत्रसाल में, फूँकी नव जागृति की श्वांस॥
रामदास ने गढ़ा शिवाजी, हुआ देश का तब कल्याण॥

तप की महाशक्ति पर घेरा, कसे हुए थे जब छल छंद।
परम हंस ने निज तप देकर, निर्मित किंये विवेकानंद ॥
जिसने रखी विश्व में भारत के, अध्यात्म ज्ञान की शान।

रामानन्द मिले तो अनुपम, ज्ञान कबीरा ने पाया॥
मीरा ने रैदास शरण पा, कृष्ण प्रेम का गुण गाया॥
नरहरि दास मिले तुलसी को, उनने किया राम गुणगान॥

फिर से महाकाल ने ऐसा, ब्रह्मकमल उपजाया है॥
जिसका सविता जैसा तेजस् भू मण्डल पर छाया है॥
आओ धारण करें उसे हम, और करें नवयुग निर्माण।

—माया वर्मा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हृदय की भावना हो तुम

तुम्हीं हो प्राण हम सबके, हमारी चेतना हो तुम,
हृदय से दूर हो कैसे, हृदय की भावना हो तुम?

बताओ, चेतना कैसे किसी तन से अलग होगी?
सुकोमल भावना कैसे सरल मन से अलग होगी?
करें कैसे विदा वे स्वर तुम्हारी प्रेरणाओं के?
थकन में जो मिले तुमसे सुखद झोंके हवाओं के?
बिछुड़ सकते भला कैसे, हमारी कामना हो तुम?
हृदय से दूर हो कैसे, हृदय की भावना हो तुम?

हमारी हर प्रगति, हर कर्म में तुम ही समाए हो,
कि संकट में सुरक्षा-चक्र ले तुम दौड़ आए हो,
दिखाया लक्ष्य तुमने ही, तुम्हीं ने राह बतलाई,
हमें पतवार दी तुमने ही, जलधि की थाह बतलाई,
हमारे साध्य औ साधन तुम्ही हो, साधना हो तुम।
हृदय से दूर हो कैसे, हृदय की भावना हो तुम?

कदम जब डगमगाए थे, तुम्हीं न तब सँभाला था,
अंधेरे मोड़ पर हमको मिला तुमसे उजाला था,
चलें, चलते रहें, यह प्रेरणा तुमने जगाई थी,
हृदय में धार करुणा की तुम्हीं ने तो बहाई थी,
हमारी दृष्टि हो तुम ही, सहज संवेदना हो तुम।
हृदय से दूर हो कैसे, हृदय की भावना हो तुम?

तुम्हारे स्नेह की सिहरन सदा अनुभव करेंगे हम,
तुम्हारी प्रेरणा-पुलकन सदा अनुभव करेंगे हम,
मिलेगी जब कभी उलझन तुम्हें फिर से पुकारेंगे,
तुम्हारे कार्य पथ पर हम स्वयम् सर्वस्व वारेंगे,
हमारे हर भविष्यत् की सुखद संकल्पना हो तुम।
हृदय से दूर हो कैसे, हृदय की भावना हो तुम?

—शचीन्द्र भटनागर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहकर 'पिता' मगर हम किस को बुला सकेंगे

गुरु-रूप' की तुम्हारे अब कल्पना करेंगे,
लेकिन पिता! तुम्हें हम कैसे भुला सकेंगे।

गुरु-रूप में दिया जो, वह ज्ञान याद तो है,
जो भी सृजन किया वह, हर ग्रंथ साथ तो है।
उस ज्ञान का सहारा, हमको प्रकाश देगा,
गुरुवर! सृजन तुम्हारा, उत्साह, आश देगा,
कहकर 'पिता ' मगर हम किसको बुला सकेंगे,

देता जिसे पिता ही, वह प्यार अब कहाँ है,
कन्धे कहाँ पिता के, आधार वह कहाँ है।
वे हाथ अब कहाँ हैं, जो थपथपा रहे थे,
वे नयन अब कहाँ, जो ममता लुटा रहे थे।
अब कौन पितृ ममता की छलछला सकेंगे,

'परिवार' बनाया था क्या छोड़ चले जाने?
क्या प्यार बढ़ाया था, दिल तोड़ चले जाने?
हम सीख ही रहे थे, उँगली पकड़ के चलना,
बाँहे पकड़ तुम्हारी, सद्पथ पर पैर धरना,
अब कौन थाम बांहे, हमको चला सकेंगे।

बोलो जहाँ कहीं हो, विश्वास तो हमें दो,
विस्मृत नहीं करोगे, आभास तो हमें दो।
छाया बनी रहेगी, हम पर पिता सदा ही,
वात्सल्य भावना से होगी नहीं जुदाई।
हम इस तरह दिलासा, दिल को दिला सकेंगे।

कोई न कह सके यह, हम हैं बिना पिता के,
हो हौसले हमारे, इतने बुलंद बांके।
बन भव्य भावनायें, मन में विहार करना,
हम भटकने न पायें, हर क्षण विचार करना,
है साथ में पिता, यह जग को बता सकेंगे,

—मंगल विजय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सामीप्य की अनुभूति

हमारे वंशजों प्रियजन कहीं पर भी रहो तुम,
हमारे स्नेह की पुलकन सदा अनुभव करोगे।

हमारे स्नेह के निर्मल सरोवर से जुड़ा जो,
नहीं कुम्हला सका ऐसा अरूण जलजात कोई,
हृदय की पीर फिर हमसे तुम्हारी छिप न पाई,
रही क्या अनकही हमसे तुम्हारी बात कोई?

तुम्हारा मन अगर अब भी कभी थकने लगेगा,
हमारे स्नेह का निर्झर सदा अनुभव करोगे।

असीमित चेतना होकर समा पाई न जिसमें,
विनश्वर काय-पिंजर का कहो फिर शोक कैसा?
घिरा हो मोह का जिसमें अँधेरा हर कदम पर,
बताओ वह सुदृढ़ संकल्प का आलोक कैसा?

अड़ेगा सामने अवरोध बनकर जब अँधेरा,
तभी उगता हुआ दिनकर सदा अनुभव करोगे,

बिछुड़ने के लिए बिल्कुल नहीं हम सब मिले थे,
मगर अब तो तुम्हारे हम बहुत नजदीक होंगें,
सभी संशय, समस्या और सब संकट तुम्हारे,
सहज सामीप्य फिर पाकर स्वयं ही ठीक होंगें,

नहीं संदेह के मरुथल तुम्हें झुलसा सकेंगे,
सुखद संदेश का सागर सदा अनुभव करोगे।

न एकाकी कभी तुम थे, न एकाकी अभी हो,
हमारी ज्योति तुमको प्रेरणा देती रहेगी,
नहीं इक साथ सबसे कण्ठ कह पाया कभी जो,
परावाणी हमारी बात वह तुमसे कहेगी।

हमारा ध्यान करने से हुई अनुभूति जिसकी,
वही अस्तित्व जीवन भर सदा अनुभव करोगे।

—शचीन्द्र भटनागर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ओ! सविता देवता

ओ! सविता देवता संदेशा, मेरा तुम ले जाना।
जहाँ कहीं हो गुरूवर उन तक, सुनो इसे पहुँचाना॥

कष्ट दिया तुमको कि तुम्हारी ही सब जगह पहुँच है।
मिले सहारा हमें तुम्हारा यह हम सबका हक है॥
हम लाखों बच्चों के हित तुम इतना कष्ट उठाना।
ओ! सविता देवता-संदेशा मेरा तुम ले जाना॥

कह देना अपने बच्चों पर आप भरोसा रखना।
बचा कार्य हम पूर्ण करेंगे दृष्टि बनाये रखना।
रहो कहीं,सबको बढ़ने का साहस देते जाना।
ओ सविता देवता संदेशा, मेरा तुम ले जाना॥

कह देना दुख में भी हमने, क्षण भर नहीं गंवाया।
आँसू पीकर भी हर पग पर, अनुशासन दुहराया॥
तन मन में बन प्राण विचरना प्रभु यह मत बिसराना।
ओ! सविता देवता संदेशा मेरा तुम ले जाना॥

लक्ष्य पूर्ति हित साथ तुम्हारा,हम हरदम पायेंगे।
सिसकेगा तो हृदय मगर यह कह कर समझायेंगे॥
बन विराट प्रभु सतत साथ है, रे मन मत घबराना।
ओ! सविता देवता संदेशा मेरा तुम ले जाना॥

तुम केवल मानव कब थे, प्रभु तुम तो थे अवतारी।
युग निर्माण योजना रच दी नवल सृजन हित न्यारी॥
इसमें मिला सही जीवन,जीने का विशद खजाना।
ओ! सविता देवता संदेशा मेरा तुम ले जाना॥

सत्यलोक में तुम्हें मिलेंगे, वे हम सबके प्यारे।
आत्म शाँति पायेंगे सुनकर यह संकल्प हमारे।
लिया बहुत उनसे हम सबने अब है फर्ज निभाना।
ओ! सविता देवता संदेशा मेरा तुम ले जाना॥

—माया वर्मा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कारवाँ साथ चलेगा

अगर आपका स्नेह मिलता रहेगा।
सतत कारवाँ साथ चलता रहेगा।१।

बिछुड़ हम गए थे,गले से लगाए,
न जाने कहां से, हमें ढूंढ लाए।
भटक जब रहे थे, हमें पथ दिखाया,
दिया प्यार इतना कि, अपना बनाया।
इसी प्यार को मन, मचलता रहेगा।२।

जिन्हें आपने, त्याग-तप से जलाई,
हमें आपने, वे मशालें थमाई।
चलेंगे मशालें लिए, साथ में हम,
थमा हाथ को, आपके हाथ में हम।
कि यह कारवाँ, तम कुचलता रहेगा।३।

रुकेगा नहीं सारथी! आपका रथ,
सुनेंगे नए जागरण-गीत, जनपथ।
जलेंगे प्रखर ज्ञान के दीप बनकर,
तिमिर चीरते हम, चलेंगे उछल कर।
बुझेगा न हर दीप जलता रहेगा।४।

वचन दे रहे, साथ में सब चलेंगे,
न बदनाम, हम कारवाँ को करेंगे।
रुकेंगे न जब तक कि मञ्जिल मिलेगी,
चलेंगे सभी, साँस जब तक चलेगी।
वचन प्राणपण से, ये पलता रहेगा।५।

—मंगल विजय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जग पहचान न पाया

अन्धकार आसुरी वृत्ति का जिसने दूर भगाया,
देवदूत उतरा धरती पर, जग पहचान न पाया।

सुधा समझ विष के प्याले थे हम हाथों में पकड़े,
पेट और प्रजनन-कारा में सभी रात दिन जकड़े।
धोकर कल्मष-पंक यहाँ जिसने पंकज विकसाया,
देवदूत उतरा धरती पर, जग पहचान न पाया।

रहा जागता वह युग प्रहरी, हम सब बेसुध सोते,
मुस्कानों से रहे निरन्तर पीर परायी ढोते,
करती रही प्राण-मन शीतल, बोधि-विटप की छाया,
देवदूत उतरा धरती पर, जग पहचान न पाया।

गूंज रही सतयुगी, ऋचा-सी, अब भी जिसकी वाणी,
दिखा रही दिग्भ्रांत जगत को, दिशा नयी कल्याणी,
दिया प्रकाश अखण्ड-ज्योति का दीपक दिव्य जलाया।
देवदूत उतरा धरती पर, जग पहचान न पाया।

फैले आज प्रखर प्रज्ञा के सूक्ष्म जगत में कम्पन,
बन सकते नर से नारायण, जुड़कर जिनसे जन-जन,
छोड़ गयी पद चिह्न क्रान्ति के, जिसकी पावन काया,
देवदूत उतरा धरती पर, जग पहचान न पाया।

—डॉ हरगोविन्दसिंह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संकल्प पर्व

आया देवदूत धरती पर,स्वर्णिम सृष्टि बसाने,
तम से लड़ने ज्योति सुतों को फिर झकझोर जगाने।

हिमगिरि सा जो आदर्शों के लिए, रहा दृढ़ अविचल,
ज्ञानगंग की सुरसरि जिससे, हुई प्रवाहित छल-छल,
संस्कृति के इस युग प्रहरी में, महाकाल ही हँसते,
प्रेम,दया, करुणा के निर्मल, स्त्रोत जहाँ से झरते,
तत्पर था जो मानव हित में ही निज सत्व गलाने।

क्षमताओं के महासिंधु की, बिन्दु थाह कब पाते?
ऋद्धि,सिद्धि, वैभव विभूति जिसके तल में गहराते।
अन्तरिक्ष सा जो विराट, ब्रह्माण्ड रूप दिखलाता,
विश्व व्यवस्था,पालक, हन्ता सर्वशक्ति उद्‌गाता।
भारत भू पर हुआ अवतरित इसका मान बढ़ाने।

था जीवन्त प्रखर प्रज्ञा जो तप में सविता सुत था,
युग का व्यास, ज्ञान गंगा का भागीरथ वह खुद था।
बनकर बुद्ध रोक दी जिसने बुद्धिवाद की आँधी,
त्याग तितीक्षा तप सेवा की सतत् साधना साधी।
किया विनिर्मित नया संगठन, युग प्रवाह पलटाने।

युग सृष्टा के चरणों में श्रद्धांजलि आज समर्पित।
तन मन धन सर्वस्व सभी अब,हैं उस प्रभु को अर्पित।
हिमगिरि का कहता प्रतीक, तुम दृढ़ संकल्प जगाना।
कहता उपवन नन्दन वन सा वसुधा को महकाना।
संकल्पों का पर्व बने यह, नव इतिहास रचाने,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महाप्राण का महाप्रयाण

हुए प्रकम्पित स्वर नयनों में विकल वेदना छाती।
महाप्राण से अब प्राणों की दूरी हमें रुलाती।

क्षुद्र अकिंचन हम दीपों ने ज्योति तुम्हीं से पाई,
हारे-थके हुए नयनों में तुमने आस जगाई।
टूटी मन-वाणी की अनुपम सरगम पुनः सजाई,
दिशाहीन जब भटक रहे थे, राह नयी दिखलाई।
अनुपम अनुदानों की गाथा नहीं भुलायी जाती। महाप्राण से.

विष में डूबी मानवता को सुधापान करवाया,
दुःख दर्दों से बिलख रहे, उनमें मधुहास जगाया।
प्यासी जगती ने तुमसे ही स्नेह-स्रोत है पाया,
अखिल विश्व को धर्म और संस्कृति का पाठ पढ़ाया।
हर पल जले जगत के हित में बनकर दीपक बाती। महाप्राण से.

आज हमारी बारी है, हम भी विश्वास दिलावें,
आदर्शों के लिए हृदय में तड़पन व्यथा जगावें।
बन प्रामाणिक और क्रियारत, अविरल कदम बढ़ाएँ।
बचा हुआ जो काम, प्राण देकर भी उसे बनाएँ।
सींचे खून पसीने से अभिनव अंकुर की थाती। महाप्राण से.

भागीरथी ज्ञान की गंगा से जग को सरसाने,
क्रान्ति विचारों में लाने को बुन लें ताने बाने।
समता, ममता और एकता के हम गायें तराने,
नन्दन वन के पुष्प बने इस वसुधा को महकाने।
राह नवल निर्माणों की हमको आवाज लगाती।
महाप्राण से अब प्राणों की दूरी हमें रुलाती॥

—सुरभि कुलश्रेष्ठ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऋषि परम्परा को नमन

युग के विश्वामित्र नमन् कर रहा विश्व तुमको स्वीकारो,
तन तो तन से बिछुड़ गया,पर मन तो मन से नहीं बिसारो।

युग वशिष्ठ तुमने गायत्री-कामधेनु का दूध पिलाया,
माँ से बेटे बिछुड़ गये थे, किया अनुग्रह उन्हें मिलाया।
युग के याज्ञवल्क्य! तुमने ही, यज्ञपिता की बाँह थमाई,
ओज,तेज, वर्चस् के दाता, सविता से पहचान बढ़ाई।
आप बिना है कौन हमारा, इस पीड़ा पर तनिक विचारो।

विकृत चिंतन से अभिशापित, युग-युग से यह जन मानस था,
पतन,पराभव,पीड़ाओं से,टूटा-टूटा जनमानस था।
युग भागीरथ! तुमने तपकर, प्रज्ञा-हिय हिमनग पिघलाया,
और ज्ञानगंगा लहराई दुश्चिंतन से मुक्त कराया।
युग के परशुराम! तुम फिर अब विकृतियों के शीश उतारो,

युग दधीचि! सुर-संस्कृति के हित तुमने निज अस्थियाँ गलां दीं,
पीकर विश्व वेदना का विष, नीलकंठ गरिमा दोहरा दी।
पीड़ित मानवता की पीड़ा, हर धड़कन में बोल रही थी,
मुखमंडल की रेखाएँ भी, अन्तर पीड़ा खोल रही थीं।
जन-मानस में भी, जन पीड़ा के प्रति संवेदन विस्तारो,

क्या हम करें समर्पित इस क्षण, स्वयं समर्पण की प्रतिभा को,
श्रद्धाञ्जलि क्या करे समर्पित, श्रद्धा की अथाह गरिमा को।
युग दधीचि के शक्ति कलश की साक्षी में, हम आज शपथ लें,
सतत गलेंगे जन मंगल हित, युग दधीचि को आश्वासन दें।
ओ दधीचि वंशज! दधीचि के शक्ति कलश की ओर निहारो,

—मंगल विजय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कैसे दें हम तुम्हें विदाई ?

कैसे दें हम तुम्हें विदाई ?
क्योंकि तुम्हारी प्राण चेतना ही प्राणों के बीच समाई

विदा कर दिया तुम्हें अगर, तो क्या अस्तित्व हमारा होगा ?
बिना प्राण के इस काया में, क्या व्यक्तित्व हमारा होगा ?
महाप्राण ! तुमसे ही अब तक, इन प्राणों ने है गति पाई।
कैसे दें हम तुम्हें विदाई ?

जन मंगल पथ पर उछालने, तुम्हीं उछलते रहे प्राण में!
युग पीड़ा मन में उभारने, तुम्हीं मचलते रहे प्राण में!
करूणा-निधि तुमने करुणा कर, संवेदन की सुधा पिलाई!
कैसे दें हम तुम्हें विदाई ?

आँखों के तारों पर प्रतिक्षण केवल तुम ही डोल रहे हो।
और हमारी हर धड़कन में केवल तुम ही बोल रहे हो।
कैसे कहें ? विछोह हुआ है, बने हुए हो जब परछाई।
कैसे दें हम तुम्हें विदाई ?

हम भी साथ नहीं छोड़ेंगे, यह आश्वासन देते हैं हम।
कमर बाँधकर खड़े रहेंगे खड़ा जहाँ भी कर दोगे तुम।
लक्ष्य तुम्हारे तक पहुंचेगे, हमने कसम तुम्हारी खायी।
कैसे दें हम तुम्हें विदाई ?

साथ आपके खड़े रहेंगे, नयी सदी का स्वागत करने।
और दीप सा जले रहेंगे, जन-पथ पर फैला तम हरने।
वह मशाल अब सदा जलेगी, जो है तुमने हमें थमाई।
कैसे दें हम तुम्हें विदाई ?

पार्थिव को तो विदा कर दिया, इस सीने पर पत्थर रखकर।
लेकिन तुम्हें सहेज लिया है, अपने इन प्राणों में भरकर।
तुम तो 'महाकाल' हो जिसने, काल चक्र की चाल चलाई।
कैसे दें हम तुम्हें विदाई ?

—मंगल विजय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरु कृपा और दक्षिणा

जो नहीं दे सका कोई भी आज तक ,
पूज्य गुरुदेव! वह दे दिया आपने।
प्राण में प्रेरणा-भाव संवेदना,
बुद्धि को श्रेष्ठ चिंतन दिया आपने।

अन्यथा प्राण रहते भी निष्प्राण थे,
भाव संवेदनाशून्य पाषाण थे,
प्राण सद्भावना से मचलने लगे,
पूज्यवर ! यह अनुग्रह किया आपने।

आपने तप किया, पुण्य हमको दिया,
आपने दिव्य अहसान हम पर किया।
कर तितीक्षा,हमें ज्ञान अमृत पिला,
शिव हमारे लिए विष पिया आपने।

किन्तु अब दक्षिणा है चुकानी हमें,
और गुरु वेदना है बँटानी हमें।
विश्व की वेदना से विकल वे रहे,
तिलमिलाया उन्हें विश्व संताप ने।

शिष्य हैं,दर्द गुरु का बँटायें चलो,
भार युग पीर का कुछ उठायें चलो,
दें समय, लोक पीड़ा शमन के लिए,
आज आवाज दी है महाकाल ने।

—मंगल विजय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारे लिए प्रिय यही साधना है

सदा मन हमारा रहे घर तुम्हारा-
यही कामना है यही याचना है।
चरण में तुम्हारे समर्पित रहें हम-
यही कल्पना है यही भावना है।।
मिला प्यार निर्मल हमें तो तुम्हारा-
भले ही विमुख हो तुम्हीं से रहे हम।
तुम्हीं हो हमारे हितैषी सदा से-
मगर प्यार तुमसे भी कर ना सके हम॥
हमारे हृदय में जगे प्रेम निश्छल-
अनुष्ठान हमको यही ठानना है।
तुम्हारी निगाहें रहीं नित्य हम पर-
मगर हम तुम्हें क्यों नहीं देख पाये॥
कला जिन्दगी की सिखाते रहे तुम-
मगर हम उसे क्यों नहीं सिख पाये।
चलें किस तरह हम तुम्हारी नजर में-
समझना यही है यही जानना है॥
हमें मान पद यश सताने न पाये-
कि पैसे की झिलमिल लुभाने न पाये।
हमें दुष्ट दुर्गुण डराने न पाये-
कि श्रद्धा हमारी डिगाने न पाये॥
तुम्हीं नाव हो प्रभु तुम्हीं हो खिवैया-
यही सत्य हमको तो पहचानना है॥
मिले दृष्टि ऐसी तुम्हें जो निहारे-
सधे स्वर वही बस तुम्हें जो पुकारे।
जगे बुद्धि ऐसी तुम्हें जो विचारे-
बहे आँख में जल चरण जो पखारे॥
कि जो भी है अपना बने सब तुम्हारा-
हमारे लिए प्रिय यही साधना है॥

—ब्रह्मवर्चस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनोबल हमारा बढ़ाते चलोगे

चले तो गये, पथ दिखाते चलोगे।
यह विश्वास हमको दिलाते चलोगे॥

बिछुड़कर, न बिछुड़े हुए से लगो तुम,
जहाँ याद कर लें, निकट ही लगो तुम।
दिलासा यूं दिल को दिलाते चलोगे॥ यह विश्वास.

कठिन है, तुम्हारे बिना राह चलना,
कठिन है वनो में नयी राह गढ़ना।
कहो! बाँह थामें बढ़ाते चलोगे। यह विश्वास.

कहाँ है महाप्राण सा धैर्य साहस,
मगर साथ हो तुम बहुत है यह ढाढस।
हैं जैसे भी वैसे निभाते चलोगे॥ यह विश्वास.

भरा दर्द जो आपने इन दिलों में,
संजोकर रखेंगे, उसे धड़कनों में।
सदा दर्द, अनुभव कराते चलोगे।। यह विश्वास.

न भूलेंगे हम, विश्व की वेदना को,
बढ़ायेंगे हम आपकी योजना को।
मनोबल हमारा बढ़ाते चलोगे॥ यह विश्वास.

रहे आपके, आपके ही रहेंगे,
इसी राह पर हम जियेंगे-मरेंगे।
वचन दो! समर्पण दिखाते चलोगे। यह विश्वास.

—मंगल विजय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अजर अमर वरदानी

महाकाल के अवतारी तुम, अजर अमर वरदानी,
नूतन सृष्टि बनाकर तुमने, लिख दी अमर कहानी।

परम शुद्ध वह बुद्ध तथागत, जिनको मोह न भाया,
इन आँखों से हुई अचानक, ओझल कंचन काया।
सत्य अहिंसा पथ अन्वेषक, महावीर स्वामी थे,
किया समन्वित नया पुराना, कर्मठ निष्कामी थे।

कोटि-कोटि हृदयों तक पहुँची, जिनकी अमृत वाणी,
नूतन सृष्टि बनाकर तुमने, लिख दी अमर कहानी।

किस वैदिक ऋषि ने इस युग में आ अवतार लिया था?
देवपुरुष ने मानवता को अनुपम प्यार दिया था।
माँ तेरी पावन महिमा का, जिसने ध्वज फहराया,
वह भविष्य दृष्टा युगसृष्टा ब्रह्मतेज बन छाया।

गहन तपश्चर्या से जिसने नये सृजन की ठानी,
नूतन सृष्टि बनाकर तुमने लिख दी अमर कहानी।

शक्ति साधना के स्वर उभरे, गूंजा कोना-कोना,
तभी हंस उड़ गया अकेला, करके आँगन सूना।
तन बन्धन से मुक्त प्रभामय, ज्योति अखण्ड जलाई,
धरती तो धरती, अम्बर तक जिसने राह बनाई।

जन-मन के संग एक हो गये,वह अद्‌भुत विज्ञानी,
नूतन सृष्टि बनाकर तुमने,लिख दी अमर कहानी।

आज आपके बिना देव यह घर सूना-सूना है,
लगता है बढ़ गया धरा में अंधकार दूना है।
किन्तु आपके ब्रह्मबीज हम तिल तिल जल जायेंगे,
सतयुग जहाँ कहीं भी होगा, धरती पर लाएँगे।

स्वीकारो श्रद्धाँजलि प्राणों की हे महाप्रयाणी!
नूतन सृष्टि बनाकर तुमने, लिख दी अमर कहानी।

—राम स्वरूप 'पथिक'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उज्ज्वल भविष्य का नारा

गुरुवर! तुमने दिया हमें 'उज्ज्वल भविष्य' का नारा।
डूब रही मानवता को यूँ, तुमने आज उबारा॥
जब-जब मानवता पर संकट के बादल घहराए।
परमेश्वर मानव तन धरकर, इसी भूमि पर आए॥
छँटे सभी घनघोर मेघ कुछ ऐसी हवा चलाई।
यूँ अधर्म का नाश किया, फिर धर्म ध्वजा फहराई॥
परमेश्वर को राम बुद्ध तक, जिस स्वरूप में पाया।
उसी रूप में फिर भक्तों ने, गुरुवर! तुम्हें निहारा॥ डूब रही.
कर प्रयोग तन-मन पर तुमने, सब रहस्य पहचाने।
जीवन है अनमोल इसी में वैभव भरे खजाने॥
तन तो साधन है केवल, यह भेद हमें समझाया।
रहा अभागा स्वार्थ हेतु ही जिसने जन्म गवाया॥
तुमने जो कुछ कहा, स्वयं करके सबको दिखलाया।
कभी नहीं भूलेगी धरती, यह उपकार तुम्हारा॥ डूब रही.
उमड़ अनास्था की आँधी ने घेरा इन्सानों को।
सिहर उठी है मानवता लख भीषण तूफानों को॥
संस्कार से हीन हुए थे, घर परिवार हमारे।
दिशाहिन सब भटक रहे थे, बिल्कुल बिना सहारे॥
संस्कारों की परिपाटी फिर, तुमने यहाँ चलाकर।
बचा लिया मिटने से प्रभुवर! यह अस्तित्व हमारा। डूब रही.
भरी भीड़ में एकाकी से सभी स्वयं को पाते।
इस धरती पर शेष रह गये सिर्फ स्वार्थ के नाते॥
अनय और शोषण ने अपनी महाज्वाल फैलाई।
लोभ-मोह मद ने मानव के बीच बना दी खाई।।
हे करुणा सागर! हर मन में संवेदना जगाकर।
मरुस्थल बीच बहाई जिसने गंगा की इक धारा॥ डूब रही.
आज टोलियाँ घर-घर देवस्थापन को निकली हैं।
देव-शक्तियाँ पुनः संगठित होने आज चली हैं॥
दिव्य-आत्माओं का भू पर तभी अवतरण होगा।
कलियुग की काली रातों का तभी समापन होगा॥
संस्कृति होगी एक सभी की ऐसा सूर्य उगेगा।
कहीं न जड़ता होगी ऐसा फैलेगा उजियारा॥ डूब रही.

—शचीन्द्र भटनागर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समर्पण

कर रहे भाव पूजन तुम्हारा, मातु स्वीकार लो धन्य कर दो।
मन वचन कर्म से हों समर्पण, भावना तीव्र अन्तर में भरदो।।

प्रीति पावन कहीं खो गयी है, भाव संवेदना सो गयी है।
स्नेह बन हों प्रवाहित जगत में, प्रेरणा आज यह हो रही है॥
अर्घ्य बनकर चरण पर पड़ें हम, पुण्य रसधार का ज्वार भरदो।

बढ़ गया द्वेष सद्भाव है कम, आज इन्सान की आँख है नम।
द्वेष दुर्गन्ध को दूर करने, बन सरस गन्ध जग में घुलें हम॥
शुभ्र चन्दन बनें हों समर्पित, कामना साधना दिव्य करदो।

यह जगत भर गया कंटकों से, आज मानव घिरा संकटों से।
खिल सकें फूल से कंटकों में, कष्ट को जीत लें जीवटों से॥
पुष्प बनकर समर्पित रहें हम, तीव्र उल्लास संचार कर दो।

स्वार्थ संकीर्णता की लहर है, लिप्त उसमें मनुज हर पहर है।
पुण्य परमार्थ बन दूर करदें, आज घर-घर घुला जो जहर है॥
शुद्ध नैवैद्य बनकर बटें हम, माँ हृदय में विमल प्यार भर दो।

कर रहे भाव पूजन तुम्हारा, मातु स्वीकार लो धन्य कर दो।
देव स्वीकार लो धन्य कर दो॥

—वीरेश्वर उपाध्याय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मबल की याचना

काम जब तक तुम्हारा अधूरा पड़ा,
हम रुकेंगे नहीं एक पल चैन से।
शूल अनगिन भले ही चुभें पाँव में,
उफ़ कभी हम करेंगे नहीं बैन से।

दर्शनों की लिए लालसा सर्वदा,
आपके ही लिए हम तरसते रहे,
छवि नहीं आपकी जब दिखी तो विवश
नैन बस मोहवश ही बरसते रहे,

किन्तु अब आपकी देह के मोह में,
डूबकर हम फिरेंगे न बेचैन से।
प्रेरणा हर निमिष दे सकेगा हमें,
आपका स्वर यहाँ की हवा में मिला,

बस उसी का सहारा लिए लक्ष्य की,
राह बढ़ता रहेगा सदा काफिला,
अब वही रूप अनुभव करेंगे, जिसे,
देख पाए नहीं हम खुले नैन से।

आप निस्सीम बन विश्व भर के हुए,
आप से हम सतत् आत्मबल पा सकें,
कामना है कि पावन उजाला लिए ,
एक नवयुग, नई भोर हम ला सकें,

जो तिमिर और तूफान से हो भरी,
हम डरें अब न ऐसी किसी रैन से।

—शचीन्द्र भटनागर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विरह वेदना

आप हिम्मत बँधाकर हमें चल दिये,
किन्तु! सामीप्य की याद तो आयेगी।
पास हमको बिठा , प्यार देते रहे,
यह कृपा दृष्टि, कैसे न याद आयेगी?
जब समस्या उठी, दौड़ हम आ गये,
आपसे हर समाधान हम पा गये।
दर्द जो भी हुआ, आपने पी लिया,
घाव को, स्नेह के सूत्र से सी दिया।
अब बिलखता हुआ, छोड़ कर चल दिये,
अब कहो! पीर किससे कही जायेगी?
गोद माँ की, हमारे लिए रह गई,
वह स्वयं भी, विरह वेदना सह रही।
किन्तु माँ ने, हृदय से लगाया हमें,
हर तरह, प्यार अब तक पिलाया हमें।
स्नेह से स्नात, माँ की मृदुल गोद में,
सुधि पिता की, सहज ही न क्यों आयेगी?
आँख से आप ओझल हुए हैं, मगर
सूक्ष्म से, प्राण, मन में गये है उतर।
प्राण में प्रेरणा बस उछलने लगे,
कर्म में भावना बन, मचलने लगे।
आपकी चेतना, विश्व-व्यापी हुई,
वह हमें क्यों नहीं नित्य दुलरायेगी।
हम ऋणी आपके ही रहेंगे सदा,
आपकी राह पर ही चलेंगे सदा।
ज्ञान की जो मशालें थमाई हमें,
लोक-पथ में प्रकाशित रखेंगे उन्हें।
तम मिटाते रहेंगे धरा-धाम का,
कोई आँधी न इनको बुझा पाएगी।

—मंगल विजय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हर आँसू रामायण हर कर्म गीता

औरों के हित जो मरता है, औरों के हित जो जीता है।
उसका हर आँसू रामायण प्रत्येक कर्म ही गीता है॥

जो तृषित किसी को देख सहज ही होता है आकुल व्याकुल।
जिसकी साँसों में पर-पीड़ा-भरती है अपना ताप अतुल॥
वह है शंकर जो औरों की, वेदना निरन्तर पीता है। उसका.

जो सहज समर्पित जनहित में, होता है स्वार्थ त्याग करके।
जिसके पग चलते रहते हैं, दुख दर्द मिटाने घर-घर के॥
वह है दधीचि जिसका जीवन, जगहित तप करके बीता है। उसका.

जिसका चरित्र गंगा जल सा, है स्वच्छ विमल पावन निर्मल।
जिसके उर में सद्भावों की धारा बहती कल-कल छल-छल॥
वह है लक्ष्मण जिसने पर नारी को समझा माँ सीता है। उसका.

जिसका जीवन संघर्ष बनी, औरों की गहन समस्या है।
तम में प्रकाश फैलाना ही, जिसकी आराध्य तपस्या है॥
जो प्यास बुझाता जन-जन की, वह पनघट कभी न रीता है। उसका.

जिसने जग के मंगल को ही, अपना जीवन-व्रत मान लिया।
परिव्याप्त विश्व के कण-कण में, भगवान तत्व पहचान लिया॥
उस आत्मा का सौभाग्य अटल, वह ही प्रभु की परिणीता है। उसका.

—अज्ञात

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहचान सको तो पहचानो

मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो।
मैं सबका परम हितैषी हूँ, चाहे मानो या ना मानो॥

मेरे चिन्तन से वेद बने, शुभ धर्म सूत्र निज कर्म बने,
मैने संकल्प लिया जग हित, युग परिवर्तन के मर्म बने।
संकेतों को समझो मेरे, युग धर्म सुनिश्चित पहचानो॥

जगहित युग सिंधु मथा मैंने, शुभ रत्न अनेकों प्रकट हुए,
अमृत बाँटा सारे जग को, मैं नीलकंठ-विषपान किए।
मेरी छवि है तप की गरिमा, परमार्थ रूप मुझको जानो॥

मुझको अरूप तुम कहो भले, मैं हर निष्ठा में चमक रहा,
मैं अगम शक्ति का स्त्रोत बना, सबकी श्रद्धा में महक रहा।
मैं हूँ पावन प्रज्ञा प्रवाह, मुझको विवेक का स्वर मानो।।

मैं महाकाल का रूप धरे , अब बदल रहा हूँ काल चक्र,
होगा भीषणतम शिव ताण्डव, यदि होगी मेरी दृष्टि वक्र।
अच्छा हो मेरे इंगित पर, तुम कर्म-यज्ञ निश्चित ठानों॥

तुम कहो बूँद या सिन्धु मुझे, मैं तो पावन निर्मल जल हूँ,
तुम भले मनुज या देव कहो, मैं तो ऋषि सत्ता का बल हूँ।
मैं हूँ सविता का तेज प्रखर, सत्ता विराट् मुझको जानो॥

—वीरेश्वर उपाध्याय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तुम्हारी शपथ

तुम्हारी शपथ हम निरंतर तुम्हारे, चरण चिह्न की राह चलते रहेंगे।
करेंगे तुम्हारे हरेक स्वप्न पूरे, उसी यत्न में पग मचलते रहेंगे।

वही युग-पुरुष आज जिसने गलाया,
मनुज के लिए बीज सा ही स्वयं को,
अँधेरा मरण का भला क्या करेगा,
कि जिसने मिटाया सघन घोर तम को,

तुम्हारी शपथ हम सभी अंकुरित हो, सदा सत्य बनकर निकलते रहेंगे।
तुम्हारी शपथ हम निरंतर तुम्हारे, चरण चिह्न की रह चलते रहेंगे।

तुम्हारा लिए स्नेह अपने हृदय में,
कभी आँधियों में प्रकम्पित न होंगे,
तुम्हारी किरण बाँटते हम रहेंगे,
किसी कार्य में हम विलम्बित न होंगे,

तुम्हारे जलाये दिये हम सभी हैं, तुम्हारी शपथ रोज जलते रहेंगे।
तुम्हारी शपथ हम निरंतर तुम्हारे, चरण चिह्न की राह चलते रहेंगे॥

बहाई करुण-धार जो इस धरा पर,
उसे हम कभी सूखने ही न देंगे,
हराहर मरूस्थल बने, बस इसी का,
प्रबल यत्न दिन-रात करते रहेंगे,

घनीभूत करुणा तुम्हारी सँजोये, तुम्हारी शपथ हम पिघलते रहेंगे।
तुम्हारी शपथ हम निरन्तर तुम्हारे, चरण चिह्न की राह चलते रहेंगे॥

नगर गाँव घर-घर चले जायेंगे हम,
लिए चेतनापूर्ण चिन्तन तुम्हारा,
यहाँ पा सके प्रेरणामय संदेशा,
हरेक राष्ट्र, हर जाति, जन-जन तुम्हारा,

निमिष भर नहीं देर अब हम करेंगे, न अब और संकल्प टलते रहेंगे।
तुम्हारी शपथ हम निरंतर तुम्हारे, चरण चिह्न की राह चलते रहेंगे॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तुम्हारी बताई हुई राह पर ही,
अँधेरी निशा को किरण मिल सकेगी,
कि निष्प्राण होने लगी जो मनुजता,
तभी फूल जैसी पुनः खिल सकेगी,
तुम्हारी शपथ हम इसी पर चलेंगे न अब हम दिशायें बदलते रहेंगे।
तुम्हारी शपथ हम निरंतर तुम्हारे, चरण चिन्ह की राह चलते रहेंगे॥

—शचीन्द्र भटनागर

अश्रुपूरित विदाई

भर-भर आए नयन हमारे, भरा तुम्हारा ही मन होगा।
सदा हमारे आशीषों से, भरा तुम्हारा जीवन होगा॥

जीवन पथ में सदा तुम्हारे, पग-पग पर हम साथ रहेंगे,
अगर कहीं तुम भटक गये तो, सत्पथ का संकेत करेंगे।
मगर अकेलेपन में खोया,नहीं कभी कोई क्षण होगा,
जहाँ रहोगे वहीं हमारा, भावभरा संरक्षण होगा।

लक्ष्यहीन सब भटक रहे हैं, छाया इतना गहन अँधेरा,
उड़ते-उड़ते शाम हुई है, मिला नहीं पर कहीं बसेरा।
तुम्हें पंथ भूले मानव को, देना इधर निमन्त्रण होगा,
तभी हमें संतोष मिलेगा, तभी यहाँ पूरा प्रण होगा।

युग के इस तपते मरुस्थल में, करुणा की रसधार तुम्हीं हो,
नवयुग के उज्ज्वल भविष्य के , मूल तुम्हीं,आधार तुम्हीं हो।
बढ़ी आज जिम्मेंदारी है,नष्ट नहीं कोई क्षण होगा,
अग्रदूत बन जो चल देगा, कल उसका अभिनन्दन होगा।

आओ तुम सब आगे बढ़कर, नए सृजन का भार उठाओ,
मानव का दुर्भाग्य मिटाकर, चिर नवीन सौभाग्य जगाओ।
उभरेगा देवत्व तभी तो, जब संस्कारित तन-मन होगा॥
धरा बनेगी स्वर्ग और फिर, गाँव नगर नन्दन वन होगा॥

—शचीन्द्र भटनागर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मेरा परिचय

मेरा परिचय क्या पूछ रहे, रचयिता, रक्षक, पोषक हूँ।
मैं शून्य किन्तु फिर भी विराट्, मैं आदि ऋचा-उद्घोषक हूँ॥
मैं एक, किन्तु संकल्प किया, तो एकोऽहम् बहुस्याम हुआ।
मैंने विस्तार किया अपना, ब्रह्माण्ड उसी का नाम हुआ॥
ये चाँद और सूरज मेरी आँखों में उगने वाले हैं।
हैं एक आँख में स्नेह और दूजी में प्रखर उजाले हैं॥
मनचाही सृष्टि रचाने की क्षमता वाला में कौशिक हूँ। मैं शून्य.

जिसमें मणि-मुक्ता छिपे, वह सागर की गहराई हूँ।
जिसकी करुणा सुरसरि बनती, उस हिमनग की ऊँचाई हूँ।
मेरा संगीत छिड़ा करता कल-कल करते इन झरनों में।
मैं सौरभ बिखराता रहता, इन रंग-बिरंगे सुमनों में॥
यह प्रकृति छटा मेरी ही है, इतना सुन्दर मनमोहक हूँ। मैं शून्य.

मेरे चिन्तन की धारा से,ऋषियां का प्रादुर्भाव हुआ।
मैंने जब ऋचा उचारी तो, सुरसंस्कृति का फैलाव हुआ।
मैं याज्ञवल्क्य मैं ही वशिष्ठ, मैं परशुराम, भागीरथ हूँ।
जो कभी अधूरा रहा नहीं, मैं ऐसा प्रबल मनोरथ हूँ॥
प्रण पूरा करने महाकाल हूँ, काल चक्र अवरोधक हूँ। मैं शून्य.

जनहित में विष पीने वाली, विषपायी मेरी क्षमता है।
जनपीड़ा से विगलित होती, ऐसी करुणा है, ममता है॥
मैंने साधारण वानर को, बजरंग बनाकर खड़ा किया।
मेरी गीता ने अर्जुन को अन्याय मिटाने अड़ा दिया॥
विकृतियों से लोहा लेने, सुर-संस्कृति का संयोजक हूँ। मैं शून्य.

मैंने संकल्प किया है फिर, मानव को देव बनाऊँगा।
फिर प्यार और सहकार जगा, धरती पर स्वर्ग बसाऊँगा।
मैं लाऊँगा उज्ज्वल भविष्य, इसका साक्षी यह दिनकर है।
मेरे संग सविता के साधक , गायत्री वाला परिकर है॥
मैं युग-द्रष्टा, युग-स्त्रष्टा हूँ, युग परिवर्तन का उदघोषक हूँ। मैं.

— मंगल विजय

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ.प्र.)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org